REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की स्व अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन

रश्मि उपाध्याय[1] एवं डॉ. आलोक शर्मा[2]
[1]सहा. प्राध्यापिका,व्ही.एन.एस.कॉलेज ऑफ फिज़िकल एजूकेशन एंड मेनेजमेन्ट स्टडीज़, भोपाल.
[2]प्राचार्य, आयुष्मति कॉलेज, भोपाल.

यह अध्ययन 2019 में किया गया है। इस अध्ययन के द्वारा भोपाल के माध्यमिक शिक्षा मण्ड़ल से सम्बद्ध शासकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्व अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। दो अलग–अलग विद्यालयों के 50–50(100) विद्यार्थियों का प्रतिदर्श लिया गया। जिन पर आर.के.सारस्वत द्वारा निर्मित स्व–अवधारणा प्रश्नावली (SCQ) का उपयोग किया गया। इस प्रपत्र का उपयोग करके समंक एकत्रित किया गया। समंक विश्लेषण हेतु सांख्यिकी तकनीक जैसे– माध्य, मानक विचलन तथा t-test लगााया गया। समंक विश्लेषण के बाद परिणाम प्राप्त हुआ। परिणाम यह था कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्व अवधारणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना

स्वयं के विषय में विचार बनाना। स्व–अवधारणा, स्वयं में विश्वास का एक समूह है। स्व–अवधारणा स्वयं के लिए एक विचार है। स्व–अवधारणा स्वयं के आचार–विचार व प्रकृति के लिए प्रेरणात्मक कार्य करते हैं। स्व–अवधारणा, स्वयं पर स्वयं की अनुभूति है। स्व–अवधारणा एक संगठित संरचना है जिसमें दृष्टिकोणों और विश्वासों का एक समूह होता है जो विशिष्ट व्यव्हारों एवं योग्यताओं को एक साथ उल्लेखित करते हुए, व्यक्त करते हैं। स्व–अवधारणा को भिन्न–भिन्न रूप से दर्षाया जा सकता है। स्व–अवधारणा, व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व के बारे में प्रदर्षन करवाता है। व्यक्ति की स्व–अवधारणा में व्यक्तिगत पहचान सम्मिलित होती है।

शोध की आवश्यकता

विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते है। उन विद्यार्थियों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने के लिए, उसे स्वयं को समझने की आवश्यकता होती है। विद्यार्थियों में स्वयं का विकास करने की आवश्यकता होती है। यदि उनमें स्वयं के प्रति नवीन दृष्टिकोणों का सृजन होता है तो उसका प्रभाव उसकी क्षमता, योग्यता तथा सफलता पर पड़ता हैं। उनकी स्व अवधारणा से ही उनके भावी जीवन का निर्धारण होना प्रारम्भ होता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इस शोध की आवश्यकता अनुभव की गयी। अतः यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध होगा।

उद्देश्य कथन

शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की स्व अवधारणा की तुलना करना।

परिकल्पना

"शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की स्व अवधारणा में सार्थक अन्तर नहीं है।"

अध्ययन का सीमांकन

1. यह अध्ययन केवल गांधी नगर, भोपाल के विद्यार्थियों पर ही किया गया है।
2. इस अध्ययन हेतु मध्यप्रदेश के माध्यमिक शिक्षा मण्ड़ल से संबद्ध दो अलग–अलग विद्यालयों का चयन किया गया हैं।
3. इस अध्ययन हेतु शासकीय एवं निजी विद्यालयो का चयन किया गया।
4. इस अध्ययन हेतु 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

- **चामुन्डेश्वरी (2015).** ने ''उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म संकल्पना और अकादमिक उपलब्धि'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देष्य उच्च माध्यमिक स्तर के 321 छात्रों को चुना गया। सारस्वत की प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। उपयुक्त सांख्यिकीय के सहयोग से परिणाम प्राप्त किए गए। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि केंद्रीय बोर्ड स्कूलों के छात्र की और अन्य बोर्डों के छात्रों की तुलना में स्व अवधारणा एवं अकादमिक उपलब्धियों में बेहतर थे। उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों के स्व–अवधारणा और शैक्षिक उपलब्धियों के बीच सार्थक और सकारात्मक संबंध है।
- **भराती** व **पेट्टुगनी (2013).** ने ''किशोरों के आत्म–संकल्पना पर एक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। इस अध्ययन में सारस्वत (1984) के स्व–अवधारणा पैमाने का उपयोग हैदराबाद, तेलंगाना राज्य के शहरों के 40 किशोरों की आत्म–अवधारणा का विश्लेषण करने के लिए किया गया था। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि किशोरों के, स्वभाव (85 प्रतिशत), बौद्धिक (77.5 प्रतिशत), भौतिक (60 प्रतिशत) और सामाजिक (52.5 प्रतिशत) के आयाम में आत्म–अवधारणा के औसत स्तर से ऊपर था। लगभग 47.5 प्रतिशत किशोरों में शिक्षा के क्षेत्र में उच्च और औसत आत्म–अवधारणा थी। और 57.5 प्रतिशत किशोरों में उच्च नैतिक आत्म–अवधारणा थी। समग्र आत्म–अवधारणा में किशोरों को उच्च में 27.5 प्रतिशत और 72.5 प्रतिशत औसत से ऊपर पाया गया। किशोरों में के दानो समूहों में अन्तर पाया गया।
- **रथ** और **नंदा (2012).** ने ''आत्म–अवधारणाः किषोरों पर एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। किशोरों की आत्म–अवधारणा पर लिंग और शैक्षणिक क्षमता के प्रभाव की जांच करने का प्रयास किया गया है। वर्तमान अध्ययन में, ओडिशा के विभिन्न शहरी कॉलेजों में 240 किशोरों (120 अकादमिक सक्षम किशोरों में 80% या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले और 120 अकादमिक रूप से कम सक्षम किशोरों को 50% या उससे कम अंक प्राप्त करने वाले) नमूने लिए गए। 120 किशोरों के प्रत्येक समूह में 60 लड़के और 60 लड़कियां हैं। सभी विषय प्रथम वर्ष के स्नातक छात्र थे। परिणाम ने संकेत दिया कि अकादमिक रूप से सक्षम किशोरों में कम सक्षम लोगों की तुलना में उच्च शारीरिक, नैतिक, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और समग्र आत्म–अवधारणा है। अतः दोनों समूहों में अन्तर पाया गया। व्यक्तिगत आत्म–अवधारणा और लड़कों में समग्र आत्म–अवधारणा के बीच सहयोग की क्षमता लड़कियों में पाए जाने वाले संघ की तुलना में अधिक है। इसी प्रकार, शारीरिक आत्म–अवधारणा और समग्र आत्म–धारणा के साथ–साथ सामाजिक आत्म–अवधारणा और समग्र आत्म–अवधारणा की क्षमता लड़कों की तुलना में लड़कियों में अधिक है।
- **पुजार** और **गावकर (2000).** ने ''उच्च और निम्न स्तर के समूहों के लिए किशोरों की आत्म–अवधारणा पर आयु और परिवार के प्रकार को जानने के लिए एक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। उपयुक्त प्रष्नावली के माध्यम से समंक प्राप्त किया गया। धारवाड़ शहर में अंग्रेजी माध्यम के हाई स्कूल के उच्च और निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले छात्रों स सम्बन्धित किशोरों की स्व अवधारणा पर आयु और परिवार के प्रकार के प्रभाव का विश्लेषण किया। अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि उच्च और निम्न उपलब्धि प्राप्त किशोरों के

बीच स्व–अवधारणा की अभिव्यक्ति आयु के साथ बेहतर हुई और एकल परिवारों के छात्रों की स्वयं की अवधारणा संयुक्त परिवारों की तुलना में अधिक थी।

शोध विधि

शोध से संबंधित चरों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि द्वारा किया है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा मण्ड़ल से सम्बद्ध शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का स्व अवधारणा का तुलनात्मक का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के अंतर्गत प्रतिदर्श चयन, उपकरण प्रयोग, सर्वेक्षण विधि, परीक्षण का प्रशासन तथा सांख्यिकीय तथ्यों का विश्लेषण किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में प्रदत्तो की संकलन विधि में के अध्ययन हेतु आर.के.सारस्वत द्वारा निर्मित स्व–अवधारणा प्रश्नावली (SCQ) का उपयोग किया गया।

प्रतिदर्श

माध्यमिक शिक्षा मण्डल से संबद्ध शासकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। प्रतिदर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों की संख्या 100 है। जिनमें षासकीय विद्यालय के 50 विद्यार्थी एवं निजी विद्यालय के 50 विद्यार्थी थे।

प्रदत्तों का विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण सारणी

शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की स्व अवधारणा का मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान।

चर	समूह	संख्या	ध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–सारणीमान	परिकलित टी–मान	सार्थकता 0.05 स्तर
स्व अवधारणा	शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थी	50	171.60	16.51	1.97	- 2.648	सार्थक (S)
	निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	50	178.68	9.19			

df=98

आरेख

शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के मूल्यों का मध्यमान एवं प्रमाप विचलन

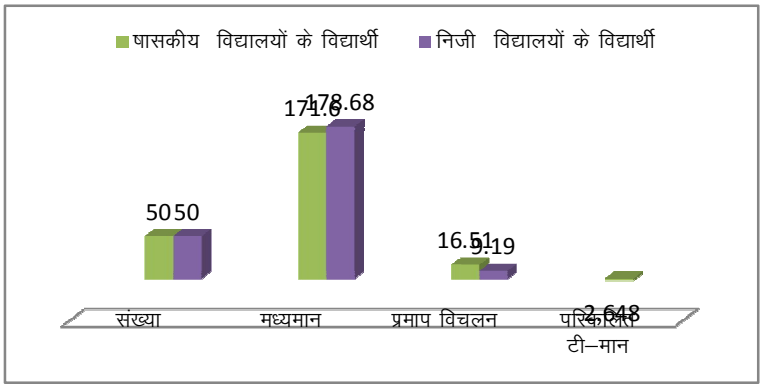

विश्लेषण की व्याख्या

तालिका एवं **आरेख** के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्व अवधारणा का मध्यमान क्रमशः 171.6 एवं 178.6 है। इस प्रकार शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की स्व अवधारणा का मध्यमान निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम है। तालिका से स्पष्ट है कि परिकलित टी मान –2.648 है जबकि (df)=98 के लिए 0.05 स्तर सार्थकता परीक्षण के लिए टी का सारणीमान 1.97 है। इस प्रकार सारणीमान से परिकलित मान कम है (-2.684<1.97) अतः असार्थक अन्तर है। अतः कह सकते है कि शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की स्व अवधारणा में सार्थक अन्तर नहीं है। इस प्रकार परिकल्पना शून्य परिकल्पना सत्य है एवं स्वीकृत होती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना असत्य एवं अस्वीकृत होती हैं।

परिणाम

उपयुक्त विश्लेषण से परिणाम स्पष्ट है कि– शासकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की स्व अवधारणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव

प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर शासकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव हैः–

1. इस विषय पर अन्य स्तोंर पर शोध किए जा सकते हैं।
2. महाविद्यालयीन स्तर के विद्यार्थियों पर भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. बौद्धिक क्षमता, योग्यता, अभिवृत्ति, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक आकांक्षा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, व्यवहार और सांस्कृतिक–शैक्षिक रूचि एवं मूल्यों आदि क्षेत्रों में कार्य किया जा सकता हैं।
4. अन्य जिलों/प्रांतों से और अधिक संख्या में समंक प्राप्त कर विद्यालयों में अध्ययन को व्यापक आधार दिया जा सकता है।
5. वर्तमान अध्ययन सम्पूर्ण, व्यापक और अंतिम नहीं हो सकता है, इस अध्ययन में विभिन्न सम्भावनाएं अपेक्षित हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

• **चामुन्डेश्वरी, एस. (2015).** उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों की आत्म संकल्पना और अकादमिक उपलब्धि'' जरनल ऑफ सोषियोलोजिकल रिसर्च, वॉल्युम 4, नम्बर 2.

- **भराती, टी. अरूणा** व **पेट्टुगनी, श्रीदेवी (2013).** किशोरों के आत्म–संकल्पना पर एक अध्ययन, https://www.researchgate.net/institution/Professor_Jayashankar_Telangana_State_Agricultural_University
- **रथ, संगीता व नंदा, सुमित्रा (2012). आत्म–अवधारणाः किशोरों पर एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन, इन्टरनेशनल जरनल ऑफउ मल्टीडीसीप्लीनरी रिसर्च़, वॉल्यूम 2, इश्यु 5, ISSN 2231 5780 www.zenithresearch.org.in**
- **सडगविक, पी. (2014).** छात्रों की पठन एवं गणित के प्रति स्व–अवधारणा और मूल्य, लघु षोध प्रबंध, फलोरिडा स्टेट युनिवर्सिटि लाईब्रेरीस इलेक्टोनिक थिसिस, डिसरटेषन द ग्रेजुएट स्कुल.
- **पुजार, एल.** व **गावकर, वी. (2000).** उच्च और निम्न स्तर के समूहों के लिए किशोरों की आत्म–अवधारणा पर आयु और परिवार के प्रकार को जानने के लिए एक अध्ययन, इन्डियन साईकोलोजिकल रिव्यु, 54(1-2), pp. 24-26.